आदी आदिवासी समाज में 'नबीङ' की भूमिका

ईङ परमे

अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी समुदायों में से एक महत्त्वपूर्ण समुदाय है आदी आदिवासी। 'आदी' संयुक्त रूप से एक आदिवासी समूह का द्योतक है, जो चौदह उपसमुदायों- आसिङ, कोमकार, कारको, ताङगाम, पादाम, पाङगी, पासी, पाईलिबो बोरी, बोकार, मिन्योङ, मिलाङ, रामो, सिमोङ को मिलाकर बनता है। आदी समुदाय का विस्तार मुख्यतः अपर सियाङ, ईस्ट सियाङ, वेस्ट सियाङ, लोअर दिवाङ वैली, लोहित और नामसाई जनपद है। आदी समुदाय में 'नबीङ' की संस्कृति है। नबीङ बच्चे को देखभाल करने वाली सामान्यतः छोटे लड़के/ लड़की को कहा जाता है। इसका मतलब है कि लड़के और लड़कियाँ दोनों को नबीङ कहा जा सकता है। यहाँ यह भी बात रखना आवश्यक है कि कुछ परिवारों में बालिग का नबीङ बनना भी देखा गया है। 'नबीङ' को देखभालकर्ता या केयरगिवर कह सकते हैं। परिवार का कोई भी सदस्य बच्चे की देखभाल करता है, परंतु बच्चे को देखने के लिए किसी बाहरी लड़की/लड़का को रखना प्रथागत है। यदि दंपत्ति की पहले से संतान है तो वह भी नबीङ बन सकता है। इस समाज में नबीङ रखना बाल श्रम में नहीं आता है। नबीङ बनना बच्चे के ऊपर निर्भर होता है। कोई जबरदस्ती नहीं की जाती। अपने सगे संबंधी या गाँव वालों के किसी भी बच्चे को नबीङ के लिए चुना जाता है। आदी समाज में 'नबीङ' का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्त्व है। आदी समाज में नबीङ की सेहत का भी विशेष ध्यान दिया जाता है।

आदी लोक साहित्य में भी 'नबीङ' का प्रसंग देखने को मिलता है। एक आदी लोककथा के अनुसार तानी (आदि पुरुष) जन्म के पश्चात् रोने लगा था, वह चुप नहीं हो रहा था। ऐसे में कई नबीङ ने तानी को शांत कराने का अथक प्रयास किया। प्रथम नबीङ को लेकर आदी समाज में मतभेद है। कोई कहता है कि प्रथम नबीङ 'हिरण' था। वह नोमगु नोमनाङ देश (जंगल) का वासी था -

"नोमगू दूमपीङ अ यायी म
नोमनाङ दूमपीङ अ यायी म
दोनी आने आजी म
आजी नबीङ अम बीमो कीदोपे"[1]

इस लोक गीत में हिरण को 'दूमपीङ अ यायी' कहा गया है। हिरण ने 'रीपूम अप्पोन' (रिपुम नामक बेल से बना बच्चे को पीठ में बांधने का पारंपरिक बेल्ट) से तानी को पीठ पर लादकर शांत रखने का अथक प्रयास किया, जिससे उसके घुटने भीतर की तरफ मुड़ गये। आदी में यह मान्यता है कि आज भी इसीलिए हिरण के घुटने भीतर की ओर मुड़े होते हैं। असफल होकर वह नोमगू नोमनाङ (जंगल) भाग जाता है। उस दिन से यदि हिरण कभी गाँव या गाँव के आस-पास दिख जाये तो आदी लोग अशुभ मानते हैं, क्योंकि हिरण को देखने से गाँव में किसी की आकस्मिक मौत हो सकती है, ऐसी मान्यता आदी जनों में है। प्रस्तुत आदी लोकगाथा में इसी भाव की अभिव्यक्ति हुई है -

"अङो कोङकुअ गीदूम अम

ताकार योमसी अ दीदूम अम
लेको दुमपी मागरू अ दकुकायेकू"[2]

कुछ आदी लोक कथाओं के अनुसार कबूतर भी तानी का नबीङ कहा जाता है। वहीं कुछ लोक कथाकारों के अनुसार प्रथम नबीङ अङो कारसी अ योयी था। ये अङो ताकार वासी था जबकि हिरण नोमगू नोमनाङ (जंगल) वासी थे। कुछ कथाओं के अनुसार 'दोयीङ दुदङअ मोने' और दोयीङ पारी बीङू ने भी तानी के नबीङ की भूमिका निभाई थी। दोयीङ पारी बीङू जैसे नबीङ के चलते ही आदी समाज बच्चे के जन्म पर नबीङ रखना प्रारंभ कर दिए, जो इस लोक गाथा में उल्लिखित है -

"देलू अ पेदोङ नाने के,
पेदोङ दोनी आजी म दीरीअ
दीयीदुअम नबी अ
बीगेनाम अ म
दोयीङ यीदुआ,ददूङला
दोयीङ पारी अ मीमी ला
आजी नबी अ गागातो
दलोक माई, दोनी आजी
आजी मीबादो बातमङ ला
दोनाङ ओलो, ओलो मीबादो बातमङला
दोनी नबी अ बीमङ दुङ"[3]

नबीङ पीठ पर बच्चे को बांधकर लोरी गीत भी गाते हैं। जिसमें 'योयो गागा' गीत आदी आदिवासी समाज में बहुत प्रचलित है। इस गीत को नबीङ पीठ पर बंधे शिशु को सुलाने के लिए गाती है। वह अपने शरीर को हिलाती रहती है। लोरी गीत इतनी मधुमय होती है, जिसका बच्चे पर बहुत प्रभाव पड़ता है। एक रोता हुआ बच्चा कुछ ही मिनटों में शांत होकर सो जाता है। ऐसे गीत में बच्चे के प्रति स्नेह का संचार होता है। आदी समाज लोक साहित्य के अनुसार कोमाङ नाने (जीवन को रूप देने वाली) ने तानी (मनुष्य) को सुलाते हुए सर्वप्रथम लोरी गीत गाया था। लोरी गीत दृष्टव्य है-

"ओ योयो लो ओ पयो लो ओई ओयो लो
ओ गागा लो ओई।
ओ योयो गागे ओ पयो गागे ओई
ओ डोक्के सी ओ आनी सी ओ तोनी सी ओई
ओ इङको कोई ओ आपूक मीजीर अ
ओ गयीर दुने ओ
ओ डोक्के सो ओ मीमी को ओ लाम्कू सो
ओ कलू सो ओ आसोपे ओ दाकलाङका ओई
ओ डोक्केसीम ओ आनी सीम ओ तोनी सीम

ओ इङको मीबो अ पादाङ अ ओ लुतुन अ ओई
ओ इङको मीबो अ पादाङ अ
ओ योयो लो ओ पयो लो गागा लो ओई
ओ मीलो कोमीलो ओ यायी क ओ रालीङ सी त
ओ ततुङ लो ओ तमीन गमोपे ओई
ओ मीमे कोमीलो ओ मामी क ओ रीकबी लो
ओ बीतुङ लो ओ बीमीन गमोपे ओई
ओ मीमी बुलके अ ओ मोङको ताओ द
ओ कोत्तुलो ओ कोतमीन गमो लापे ओई"[4]

भावानुवादः

बच्चे को पीठ पर लेते हुए गाती है- ओ मेरे नन्हें भाई तुम रोओ मत। हमारी पीठ पर चुपचाप पड़े रहो तुम अपनी बड़ी दादी के पीठ पर सो जाओ। किसने तुम्हें डाँटा है, कौन तुझे डरा रहा है ? डराने वालों को मैं पिता, चाचा, मामा, सबको कह दूँगी। लड़के के संदर्भ में गायिका कहती है कि तू एक लड़का हो बेटा हो, वीर रहो। तुम्हें अपने पिता के कामों में हाथ बँटाना है, रालीङ वृक्ष की कटाई कर तुम्हें बड़ा होकर जुताई के लिए तैयार करना, अपने पिता के कामों में हाथ बँटाना है। लड़की के प्रसंग में गायिका कहती है कि ओ मेरी बहन तुम्हें बड़ी होकर अपनी-माँ के कामों में हाथ बँटाना है साथ ही अपनी बड़ी बहन को खेती में उग आए जंगली घास को साफ करने में तुम्हें सहायता भी करनी है। उक्त गीत एकल शैली में गाया जाता है। इसे नबीङ के अलावा, बच्चे की माता पिता या घर का कोई भी सदस्य भी गाते हैं। इसे समूह में भी गाया जाता है और अर्थ वही रहता है। जैसे-

गायक/ गायिका	**गायकदल**
"ओ माङकार अ	ओई
ओ कारपुङ अ	ओई
ओ मीमूम अ	ओई
ओ बूलू क	ओई
ओ मलो योयो अ	ओई
ओ गोग ग नाम अ	ओई
ओ अङो योयो अ	ओई
ओ गोग ग नाम अ	ओई
ओ अङो योयो अ	ओई
ओ ङाङा नो	ओई
ओ आपो नो	ओई
ओ सीलो नो	ओई"[5]

आदी समाज में नबीङ द्वारा लोरी गीत गाने की प्रथा रही है, जो अब माँ-पिता या परिवार के कोई भी सदस्य बच्चे को पीठ में लेते हुए गाते हैं। योयो गागा नामक लोरी गीत के अतिरिक्त नूनू पीपी, कुमबाङ पाक्को आदि लोरी गीत भी गाये जाते हैं।

आदी महिलाएं गृहस्थी के कामों के साथ-साथ कृषि कार्यों, पारंपरिक हस्तशिल्प, समुदाय के आयोजनों और उत्सवों में सक्रिय रूप से संलग्न होती हैं, इसीलिए नबीङ का विशेष महत्त्व रहता था। उनका होना बहुत आवश्यक रहता था। परंतु नबीङ का कार्य न केवल बच्चों की देखभाल करना है, बल्कि यह पारिवारिक और सामाजिक संरचना का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। नबीङ सामाजिक और नैतिक मूल्यों को आगे बढ़ाने में मदद करती है। परिवार और समुदाय के बीच सहयोग, एकजुटता की भावना भी प्रबल होती है, जो आदी संस्कृति की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। आदी समाज में नबीङ की भूमिका न केवल बच्चों की देखभाल तक सीमित है, बल्कि आदी समुदाय के समग्र विकास में भी योगदान देती है। समाज में अपनेपन की भावना को बढ़ावा देती है। यह भावना सामाजिक एकता को बनाए रखने और सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए महत्त्वपूर्ण है। आधुनिकता और शिक्षा ने जीवन के विभिन्न पहलुओं में बदलाव लाया है, जिससे आदी आदिवासी के पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं और भूमिकाओं में भी परिवर्तन देखने को मिलता है। नबीङ प्रथा वर्तमान में आदी गाँवों के कुछ एक परिवारों में देखने को मिलती है। आदी समुदाय में नबीङ की भूमिका में बदलाव आया है और यह परंपरा उतनी प्रमुख नहीं रहीं है। अब बच्चों को बाहरी घरेलू सहायक यानी मेड्स देखने लगे हैं। आदी समाज में नबीङ के स्थान पर देखभालकर्ता या केयरगिवर के रूप में मेड्स बच्चों की देखभाल में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनकी उपस्थिति ने आदी समाज की संरचना में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन ला दिया है।

संदर्भ सूची:

1. श्री कामीन योमसो और श्री नाकमीन परमे से किए गए साक्षात्कार पर आधारित
2. श्री कामीन योमसो और श्री नाकमीन परमे से किए गए साक्षात्कार पर आधारित
3. श्री कामीन योमसो और श्री नाकमीन परमे से किए गए साक्षात्कार पर आधारित
4. श्रीमती तातीर लेगो और गायकदल प्रसार भारती पासीघाट से प्राप्त
5. एन. एन ओसीक फोक सॉग्स एण्ड डांसज ऑफ अरुणाचल प्रदेश अंक-1 पृ. संख्या 64-65

***

*(**लेखकीय परिचय :** डॉ. ईङ परमे* जवाहरलाल नेहरू महाविद्यालय, पासीघाट, ईस्ट सियाङ, अरुणाचल प्रदेश के हिंदी विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। *मोबा: 8730992057, ई-मेल :* permeing@gmail.com *)*